Regarding need to take measures to promote production of Foxnut seeds (Makhana) and also set up industry for Makhana production in Purnia, Bihar-Liad

श्री राजेश रंजन **(**पूर्णिया**) :** मखाना का बोटेनिकल नाम यूरेल फेरोक्स सलीब (कमल का बीज) कहा जाता है । मखाना एक ऐसा खाद पदार्थ है जिसके उत्पादन में न तो खाद और न ही कीटनाशक का इस्तमाल होता है । खर्च के नाम पर काफी कम पैसे लगते है । इसकी मांग पूरी दुनिया में है । क्योंकि यह रासायनिक प्रभावों से मुक्त ऐसा फल है जो पौष्टिकता से भरपूर है ।

हमारे देश में लगभग 15 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में मखाने की खेती होती है । जिसमे 80 से 90 फीसदी उत्पादन अकेले बिहार राज्य में होता है । इसके उत्पादन में 70 फीसदी हिस्सा मिथलांचल (मधुबनी, दरभंगा, कटिहार तथा पूर्णिया) का है । लगभग 1,20,000 (एक लाख बीस हजार) टन मखाने का बीज उत्पादन होता है । जिससे लगभग 40,000 (चालीस हजार) टन मखाने का लावा प्राप्त होता है । पारम्परिक रूप से अभी मखाने का उत्पादन किया जाता है । मखाना का फल कांटेदार एवं छिलकों से घिरा होता है, जिससे कि इसको निकालने एवं उत्पादन में बहुत कठिनाई होती है ।

मखाना निकालने में लगभग 20 से 25 प्रतिशत मखाना बीज तालाब के सतह में ही छूट जाता है और वहीं 30 से 35 प्रतिशत मखाना छिलका उतारते समय खराब हो जाता है यानी बिहार में कुल मखाना बीज उत्पादन का 40 प्रतिशत ही मखाना तैयार हो पता है ।

मखाना उत्पादन करने वाले किसानों को उपज का मूल्य नहीं मिल पा रहा है । किसान आत्महत्या जैसे कदम उठा रहे हैं । किसानों से 200 से 300 रूपए प्रति किलो मखाना की खरीद होती है जबकि यह बाजार में 1200 से 2000 रूपए प्रति किलो बेचा जा रहा है ।

अतः भारत सरकार से मांग करता हूँ कि मखाना बीज उत्पादन हेतु उन्नत टेक्नोलॉजी कृषि यंत्र किसानो को उपलब्ध हो । वंही मखाना बीज से मखाना उत्पादन हेतु आधुनिक टेक्नोलॉजी आधारित उद्योग की स्थापना बिहार राज्य के कोशी सीमांचल क्षेत्र पूर्णिया में हो एवं सरकार मखाना का न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित करें ताकि बिचौलियों से किसानों को मुक्ति मिल सके ।

_____